महात्मागांधी का सत्याग्रह

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है सत्य के लिए आग्रह। महात्मागांधी ने सत्याग्रह का उपयोग स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किया। यह एक ऐसा अस्त्र है जिसके द्वारा शत्रु का हृदय परिवर्तन किया जा सकता है। महात्मागांधी यह अच्छी तरह से जानते थे कि अग्रेंजों से शस्त्र बल से लड़ना मुश्किल है। शस्त्रों के द्वारा धन, जन की हानि और हिंसा होगी। इसलिए उन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अहिंसा और सत्य का मार्ग चुना। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के अधिकारों की रक्षा के लिए कानूनी लड़ाई लड़ी। दक्षिण अफ्रीका में काले गोरे के बीच भेद–भाव का व्यवहार किया जाता था। महात्मागांधी के साथ भी यही व्यवहार हुआ। जब वे ट्रेन में यात्रा कर रहे थे तो उन्हें काला समझकर के उनका समान ट्रेन से नीचे फेंक दिया गया और उन्हें ट्रेन से नीचे उतार दिया गया। गांधीजी ने इसका प्रतिरोध अहिंसात्मक ढंग से किया और उनके मन में तभी से यह दृढ़ निश्चय हो गया कि जब तक अंग्रेजों को देश से बाहर नहीं निकाला जायेगा तब तक शोषण से मुक्ति नहीं मिल सकती। दक्षिण अफ्रीका से जब वे भारत लौटे तो अंग्रेजी बंधन को तोड़ने के लिए सत्याग्रह सविनय अवज्ञा आंदोलन, व्रत, उपवास, भूख हड़ताल करना शुरू कर दिया और अंग्रेजो के कुशासन को उखाड़ फेंका। गांधीजी यह जानते थे कि परतंत्रता बंधन है। बंधन का अर्थ है– परतंत्रता और मुक्ति का अर्थ है स्वतंत्रता। भारत देश पर अनेक आक्रमणकारियों ने समय–समय पर आक्रमण किया और यहां से धन लूटकर अपने देश ले गये। बहुत से आक्रमणकारी भारतीय संस्कृति में ही समा गये। लेकिन भारतीय संस्कृति की आत्मा को नहीं बदल सके। मुगलों और अंग्रेजों ने भारत पर कई शदियों तक राज्य किया। यद्यपि भारत परतंत्रता के पाश में बंधकर बहुत सी यातनाऐ झेली, किन्तु जब भारत का जनमानस जागृत हुआ तब अंग्रेजों को भारत छोड़कर भागना पड़ा। अंग्रेजी राज्य का बंधन और उसके नियम कानून भारतीय जनमानस के विरूद्ध थे। अंग्रेजों ने भारत माता को परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ रखा था। यहां की जनता बंधन से मुक्ति के लिए कराह रही

थी और एक दिन ऐसा आया जब महात्मागांधी के नेतृत्व में भारतीयों ने मिलकर अंग्रेजी शासन की नीवं को उखाड़कर फेंक दिया और स्वतंत्रता का आनन्द लिया। स्वतंत्रता सबको प्रिय होती है। किसी भी तोते को यदि पिंजड़े में बांधकर रखा जाये और उसे खाने के लिए अच्छी–अच्छी वस्तुएं प्रदान की जाये फिर भी वह प्रसन्न नहीं रहता। वह मुक्त गगन में विचरण करना चाहता है। परतंत्रता किसी को प्रिय नहीं होती, स्वतंत्रता सबको प्रिय होती है। पशु, पक्षी, मानव सभी स्वतंत्र रहना चाहते है। गांधीजी का मानना था कि सत्य और अहिंसा का पालन करते हुए यदि मृत्यु भी हो जाये तो वह भी श्रेष्ठ है। इसलिए उन्होंने सत्याग्रह को अपने जीवन का सूत्र मान लिया था। उनका कहना था कि हमें सत्य का पालन करते हुए निर्भयता पूर्वक मृत्यु का वरण करना चाहिए। जिसके विरुद्ध सत्याग्रह कर रहे है उसके प्रति बैर भाव या क्रोध नहीं करना चाहिए। सत्याग्रह में अपने विरोधी के प्रति हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। धैर्य एवं सहानुभूति से विरोधी को उसकी गलती से अवगत कराना चाहिए क्योंकि जो एक को सत्य प्रतीत होता है वही दूसरे को गलत दिखाई दे सकता है। धैर्य का तात्पर्य कष्ट सहन से है। सत्याग्रह वह सिद्धांत था जिसमें विरोधी को कष्ट अथवा पीड़ा देकर नहीं बल्कि स्वयं कष्ट उठाकर सत्य का रक्षण करना। महात्मागांधी ने कहा था कि सत्य के लिए प्रेम द्वारा आग्रह करना ही सत्याग्रह है। यह ऐसा आंदोलन है जो पूरी तरह सच्चाई पर कायम है और हिंसा के विरोध में चलाया जा रहा है। अहिंसा सत्याग्रह का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। सत्य तक पहुंचने और उस पर स्थिर रहने का एकमात्र उपाय अहिंसा ही है। गांधीजी के शब्दों में अहिंसा किसी को चोट न पहुंचाने की नकारात्मक वृत्ति मात्र नहीं है, बल्कि यह सक्रिय प्रेम की विधायक वृत्ति है। सत्याग्रह में स्वयं कष्ट उठाने की माद्दा होनी चाहिए। गांधीजी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में इसी सूत्र का पालन किया। गांधीजी का कहना था कि शत्रुता को मित्रता से जीतो। सत्याग्रह ह्रदय परिवर्तन का सिद्धान्त है। गांधीजी ने इसके लिए उपवास, पश्चाताप और अन्य अनेक प्रकार के अहिंसात्मक तरीकों को अपनाया। सत्याग्रह एक प्रतिकार पद्धति ही नहीं है एक विशिष्ट जीवन पद्धति है। इसके मूल में अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय, निर्भरता, ब्रह्मचर्य और सर्वधर्म समभाव आदि है। जिसका व्यक्तिगत जीवन इन व्रतों के कारण शुद्ध नहीं है वह सच्चा सत्याग्रही नहीं हो सकता। सत्याग्रह और निःशस्त्र

प्रतिकार में उतना ही अंतर है जितना उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव में। निःशस्त्र प्रतिकार की कल्पना एक निर्बल के अस्त्र के रूप में की गयी है और उसमें अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए हिंसा का उपयोग वर्जित नहीं है। जबकि सत्याग्रह की कल्पना परमशूर के अस्त्र के रूप में की गयी है। इसमें किसी भी रूप में हिंसा के प्रयोग के लिए स्थान नहीं है। सत्याग्रह निष्क्रिय स्थिति नहीं है यह प्रबल सक्रियता की स्थिति है। सत्याग्रह अहिंसक प्रतिकार है परन्तु वह निष्क्रिय नहीं है। गांधीजी का मानना था कि बुराई के बदले अधिक बुराई करना बुराई को बढ़ावा देना है। इसलिए वह ऐसी नीति को त्याज्य मानते थे। गांधीजी ने बुराई की बदले भलाई की नीति अपनाई। यह नीति भारतीय संस्कृति के अनुरूप थी। इसीलिए महात्मागांधी ने अहिंसा और सत्याग्रह की नीति अपनाई।